ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 126-128**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

नई शिक्षा नीति के तहत माध्यमिक स्तर पर (6–8) बालिका शिक्षा में किये गये नए प्रावधानों के संदर्भ में सोशल मीडिया की भूमिका

रेनू पवार

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, डी0बी0एस0 कॉलेज, कानपुर (उ0प्र0) भारत

Received-08.07.2024, Revised-15.07.2024, Accepted-20.07.2024 **E-mail : renupawar300682@gmail.com**

सारांशः ***वर्तमान युग शिक्षा, समानता व स्वतंत्रता का है। बिना महिलाओं की भागीदारी के हम सतत् विकास के लक्ष्यो को प्राप्त करने की कल्पना भी नहीं कर सकतें क्योंकि महिलाऐं आधी दुनिया का प्रतिनिधित्व करती हैं। वर्तमान सरकार द्वारा माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतत्व में भारतीय संसद में महिलाओं के लिए 33 : सीटों का आरक्षण–इसी कड़ी में एक ऐतिहासिक कदम है। महिलाऐं अपने अधिकारों के प्रति तब तक जाग्रत नहीं हो सकती जब तक कि वे शिक्षा गृहण करके शिक्षित न बन जाए। जिससे कोई भी उनके अधिकारों का हनन न कर सके। स्वतंत्रता के बाद से समग्र विकास के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए समय–समय पर विभिन्न राजनैतिक दलों की सरकारे बनीं जिन्होंने स्त्रियो की शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेक्ष प्रावधान किये, नियम बनाए व कानून बनाकर उनको समाज पर लागू कराया जैसे कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालय, शिक्षा का अधिकार अधिनियम– 2009, आश्रम पद्वति विद्यालय, पी0एम0 पोषण स्कीम, समग्र शिक्षा योजना, जवाहर नवोदय विद्यालय, पी0एम0 श्री स्कूल, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृति योजना, ब्वैम् उडान योजना, अटल आवासीय विद्यालय आदि। इस सभी का प्रमुख लक्षय दूर–दराज के इलाको व आर्थिक रूप से पिछड़े सामाजिक वर्गो के छात्र–छात्राओं को बिना किसी भेद–भाव के शिक्षा प्रदान करके उन्हे देश की मुख्य धारा के साथ जोड़ना है। इस उद्देश्य की पूर्ति में सोशल मीडिया के विभिन्न चैनलों की क्या भूमिका है हम इस शोध पत्र के माध्यम से यह जानने का प्रयास करेंगे।***

कुंजीभूत शब्द–समानता, स्वतंत्रता, हनन, समग्र विकास, आश्रम पद्धति, पोषण स्कीम, समग्र शिक्षा योजना, मुख्य धारा

प्रस्तावनाः शिक्षा के द्वारा ही किसी मानव का सम्पूर्ण विकास होता है। मनुष्य का वास्तविक समाजीकरण शिक्षा के द्वारा ही होता है। किसी भी राष्ट्र के संपूर्ण विकास के लिए यह आवश्यक है कि वहॉ के नागरिक शिक्षित हों। और यह हमारे शासन/प्रशासन की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि वह समाज में सभी जाति, धर्म वर्ग, वंश व लिंग, भाषा–भाषी लोगो को बिना किसी भेद–भाव के शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराऐं।

हमारे संविधान के भाग 21–ए इनकी पुष्टि भी करता है कि यह केंद्र व राज्य सरकार की जिम्मेदारी है कि वे सभी 6–14 वर्ष की आयु के बालक–बालिकाओं को अनिवार्य व निशुल्क शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान करें। जिससे कोई भी बालक य बालिका आर्थिक कारणों से शिक्षा से वंचित न रहे।

भारत द्वारा 2015 में अपनाए गयें सतत् विकास लक्ष्य के 4 एस.डी.जी. का लक्ष्य भी 2030 तक विष्व के सभी लोगो को समावेषी एंव गुणवत्तायुक्त शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराने हेतु कटिबद्व हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 जिसे 1992 में क्रियांवित किया गया कि मुख्य उपलब्धि निषुल्क एंव अनिवार्य शिक्षा का लागू करना था। जो कि 2009 व 2010 में संपूर्ण भारत में लागू भी हो गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देष्य सतत् विकास लक्ष्य एस.डी.जी. 4 लक्ष्यों को 2030 तक प्राप्त करना।

यथाः
1– निर्धनता की समाप्ति
2– भूख से मुक्ति
3– सबके लिए रोजगार
4– गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

पुरानी शिक्षा नीति के तहत राज्य सरका 12 साल तक शिक्षा देती थी किंतु नई शिक्षा नीति के तहत 15 साल की शिक्षा प्रदान की जायेगी। पुरानी शिक्षा नीति 10 के शैक्षिक पद्वति को अपनानी थी जबकि नई शिक्षा नीति मे 5334 की शिक्षा पद्धति को अपनाया गया है।

नई शिक्षा नीति के कुछ प्रमुख बिंदुः–

1. प्रत्येक छात्र की विशिष्ट क्षमताओं को पहचान कर उनको स्वीकार करना व उन क्षमताओं को और अधिक विकसित करने व निखारने मे छात्रों को प्रोत्साहित करना व शितक सहयोग प्रदान करना।
2. बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान पर सर्वाधिक बल देना।
3. छात्रों का पाठ्यक्रम लचीला हो छात्रों के सीखने की रुचि व तारे तरीकों का विशेष ध्यान रखा जाए।
4. अवधारणात्मक समझ विकसित किए जाने पर बल देना।
5. रचनात्मकता व तार्किक सोच को बढ़ावा, नैतिकता, व मानवीय मूल्यों का विकास एवं संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करना।
6. बहुभाषिकता पर बल।
7. सीखने को और अधिक प्रभावशाली बनाने हेतु सतत मूल्यांकन पर बल।
8. द डिजिटल इंफ्राइस्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग (दीक्षा एप्स) पर उच्च गुणवत्ता वाले संसाधनों का एक राष्ट्रीय स्तर पर विस्तृत भण्डार उपलब्ध कराना।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

9. माध्यमिक स्तर पर (6–8) बालिका शिक्षा के साथ – साथ ट्रांस जेंडर को भी समावेषी शिक्षा में शामिल करना।
10. कक्षा 6–8 के स्तर पर छात्र–छात्राओं को पाठ्यक्रम के साथ–साथ एक रोजगाार परक विशय की भी जानकारी व प्रशिक्षण देना जैसे– बागवानी मिट्टी के खिलौने बनाना, इलैक्ट्रिशियन, खेल–कूद में आगे बढ़ना।

नई शिक्षा नीति को ध्यान में रखते हुए व उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने में सोषल मीडिया की भी अहम भूमिका है। सोशल मीडिया पर उपलब्ध विभिन्न शैक्षिक गुणवत्ता वाले एप्स के माध्यम से एन.ई.पी. 2020 के लक्ष्यो को ना सिर्फ हासिल करने में ही मददगार है वरन ये शिक्षक व छात्र दोनों ही के लिए सूचनाअें का खजाना है जिसकी सहायता से वे छात्र व शिक्षक दोनो ही अपने कला एंव कौषल को और भी बेहतर ढंग से निखार सकते हैं।

कुछ प्रमुख शैक्षिक एप्स इस प्रकार से है– दीक्षा, स्वयं प्रभा एंव निपुण भारत App, speed Labs, Learning flix, EduRev, Doulingo, Vedantu App, Byju,s इत्यादि।

इन ऐप्स की सहायता से छात्र छात्राऍं अपने समय के अनुसार इनसे ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं अर्थात् जब भी उनके पास समय हो वो अपनी दिनचर्या के अनुसार इन ऐप्स के साथ अपनी समय–सारणी बना सकते है वे जब चाहे तब इंटरनेट की मदद लेकर इन शैक्षिक ऐप्स को विजिट कर सकते है व अपनी समस्याओं का समाधान शीघ्रता से प्राप्त कर सकते हैं।

यही कारण है कि सोशल मीडिया समाज के प्रत्येक आयु वर्ग के लोगो तक अपनी पहुँच बनाए हुए है और उनको उनके रूचि की समृद्व जानकारियॉं प्रदान करने में भी आज नंम्बर वन पर है चाहे बात कला, साहित्य,ज्ञान विज्ञान की हो य शिक्षा की मनोरंजन आदि की सभी के लिए सोशल मीडिया के पास ज्ञान व जानकारियों का एक विशाल भण्डार मौजूद है।

उद्देश्य –

1. इस बात का पता लगाना कि छात्राऍं किन–किन शैक्षिक ऐप्स की मदद ले रहीं हैं।
2. इन शैक्षिक ऐप्स को उपयोग करने में आने वाली कठिनाइयो का पता लगाना।
3. इस बात का पता लगाना कि विभिन्न सोषल मीडिया ऐप्स शिक्षा के साथ–साथ व्यवसायिक प्राशिक्षण व जानकारियॉं भी प्रदान करते है या नहीं ।
4. शैक्षिक ऐप्स को उपयोग करने हेतु छात्राओं के समय प्रबंधन के बारे मे जानना।
5. इस बात का पता लगाना कि इन ऐप्स का इस्तेमाल करके छात्राऍं अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में कितनी लाभांवित हुई है।
6. इस बात की जानकारी करना क्या उन्हे इन ऐप्स के माध्यम से उनके काम की सही जानकारी मिल रही है।

शोध प्रविधि– पद्वति शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का आषय उन समस्त विधियों एंव तकनीकियों के समूह से है जिनका उपयोग शोध कार्य के दौरान ऑकड़ो को अवलोकित करने,एकत्रित करने व विश्लेषण व वर्गीकरण आदि में किया जाता है।

अपने शोध विषय की गहन जॉच पड़ताल करने के बाद शोधार्थिनी ने इस शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु वर्णात्मक शोध पद्वति का चयन किया साथ ही प्रतिचयन विधि के रूप में नियमित आंकन विधि को अपनाया। निदर्शन पद्वति के द्वारा हम अपने शोध कार्य में किस प्रकार के निदर्शन का चुनाव करेंगे का निर्णय लिया जाता हैं। जहोदा, गुड़े एंव हॉट आदि विद्वानों ने निदर्शन के समस्त प्रकारों को मुख्य रूप से दो भागो में बॉटा हैं।

1. सम्भावित दैव निदर्शन
2. असम्भाविक दैव निर्दशन

सम्भावित दैव निदर्शन – निदर्शन के इस प्रकार में समग्र की समस्त इकाइयों के चुने जाने की समान सम्भावनाऍं होती हैं। अतः यह निदर्शन पक्षपात रहित एंव समग्र का प्रतिनिधित्व करने वाला होता है। सम्भावित दैव निदर्शन का उपयोग तभी संभव है जब समस्त इकाइयों में एक रूपता पाई जाती हो।

जहोदा ने समावित दैव निदर्शन के चुनाव की तीन विधियों का उल्लेख किया है– 1. सरल दैव निदर्शन 2. सीमित स्तरीकृत दैव निदर्शन एंव 3. बहुस्तरीय या अन्य दैव निदर्शन

इस शोध पत्र में शोधार्थिनी द्वारा सीमित दैव निर्दशन के नियमित अंकन विधि का उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधार्थीनी द्वारा कानपुर महानगर के दो माध्यामिक विद्यालयों क्रमशः 1. ओंकारनाथ वैश्य व 2. राम लला इंटर कॉलेज रावतपुर में अयध्यन करने वाली कक्षा 6–8 तक की 426 छात्राओं में से नियमित अंकन विधि द्वारा 50 छात्राओं का चयन समग्र में से अध्ययन की इकाइयों के रूप में किया गया हैं।

तथ्यों का विश्लेषण एंव निष्कर्षः– अपना क्षेत्रीय कार्य पूर्ण कर लेने के पश्चात् शोधार्थिनी द्वारा प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करने पर जो महत्वपूर्ण तथ्य उभर कर सामने आये है वे इस प्रकार से हैं।

1. अपने शोध कार्य के दौरान शोधार्थिनी ने यह पाया कि 60 प्रतिशत छात्राएँ सोशल मीडिया से तो जुड़ी हैं किंतु केवल मनोरंजन के लिए what's App, Facebook, Massanger, Twitter, Snap Chat आदि का उपयोग अपने मनोरंजन के साधन के रूप में करती हैं। 10 प्रतिशत छात्राएँ ऐसी पाई गई जो पढ़ाई में कठिनाई होने पर यू–ट्यूब पर उपलब्ध शैक्षिक व्याख्यानों का सहारा लेती हैं 30 प्रतिशत छात्राओं का वह समूह था जो अपनी विविध कलाओ जैसे पेंटिंग डांस म्यूजिक व खेलों के कौशल को निखारने में सोशल मीडिया ऐप्स का सहारा लेते हैं।
2. विभिन्न शैक्षिक ऐप्स का उपयोग करने में 70 प्रतिशत छात्राओं ने इंटरनेट की कनेक्टिवी को दोषी माना है जिसके कारण खोजे जाने वाली सूचनाओं के खुलने में बहुत समय लगता है 20 प्रतिशत छात्राओं का यह मानना है कि हम

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

ढूंढना कुछ चाहते हैं पर गूगल सर्च रिजल्ट कुछ और ही दिखाता है। 10 प्रतिशत छात्राओँ को एसी किसी समस्या का शायद ही यदा–कदा सामना करना पड़ता हो।

3. सोशल मीडिया के विभिन्न ऐप्स शैक्षिक जानकारी प्रदान करने के साथ ही साथ अन्य सहगामी व व्यवसायिक जानकारिया भी प्रदान करते हैं। शोध के दौरान 70 प्रतिशत छात्राओं ने इस बात की पुष्टि की इन ऐप्स में मुख्य रूप what's App Groups, Instagram Channal, Facebook Page, YouTube का नाम मुख्य रूप से सम्मिलित हैं। ये ऐप्स छात्रों को विभिन्न शैक्षिक जानकारियाँ प्रदान करने के साथ ही व्यवसायिक जानकारियाँ भी प्रदान करते है जैसे आर्ट एंड क्राप्ट, डांस क्लासेस, म्यूजिक क्लासेस, विभिन्न प्रकार के वाद यंत्रो का प्रशिक्षण, कुकरी क्लासेस, सिलाई, कढ़ाई का प्रषिक्षण इलेक्ट्रिक वायरिंग, वाल पेंटिंग, प्लम्बिंग, कारपेंटिंग इत्यादि की आनलाइन क्लासेस इत्यादि के प्राषिक्षण मे सहायक है।
4. शोध द्वारा यह बात ज्ञात हुई कि 75 प्रतिशत छात्राओं को समय का ध्यान ही नहीं रहता जब वे सोशल मीडिया के विभिन्न ऐप्स का इस्तेमाल कर रही होती हैं। 15 प्रतिशत छात्राएँ ही समय प्रबंधन के साथ सोशल मीडिया का उपयोग करत हैं 10 प्रतिशत छात्राएँ जब चाहें तब अपनी इच्छानुसार इन ऐप्स का उपयोग करती हैं।
5. शोध द्वारा इस बात का पता चला कि जितनी भी छात्राएँ सोशल मीडिया ऐप का उपयोग शिक्षा के साथ–साथ अन्य व्यवसायिक गतिविधियों को सीखने में करती हैं वे सभी 100 प्रतिशत. निश्चित रूप से इससे लाभांवित हो रही है व अपने हुनर को और अधिक निखार रही हैं।
6. सभी छात्राओं का यह मानना था कि उन्हें उनके काम की सही और अच्छी से अच्छी व नई–नई जानकारियाँ प्राप्त हो रही हैं।

निष्कर्ष – निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि निःसंदेह सोशल मीडिया आज हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है। बच्चो व युवाओं में इन ऐप्स के प्रति लगाव व आकर्शण बहुत अधिक पाया जाता है।

आज के छात्र व युवा जो कुछ भी जानना चाहते हैं उन सभी से संबधित सूचनाओ व जानकारीयों का एक असीमित भण्डार है सोषल मीडिया के पास बस आवश्यकता इस बात की है कि छात्र इन ऐप्स का उपयोग करते समय यह सावधानी अवश्य बरते 'कि सोशल मीडिया कहीं उनको अपने शैक्षिक लक्ष्यों से भटका न दे क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता व सत्यता और तार्किकता में बहुत अंतर पाया जाता हैं। छात्र यदि बुद्विमानीपूर्णक व उतम समय प्रबंधन के साथ इन सभी ऐप्स का उपयोग करेंगे तो निष्चित रूप से लाभांवित होंगे और साथ ही संतुश्ट भी होंगे कि सोषल मीडिया उनके पढ़ाई के घण्टे चुरा नही रहा है व उनकी शैक्षिक उपलब्धियों पर कोई भी विपरीत य नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Education in India 1979-80 New Delhi ministry of Human Resource and development- 1987
2. Fifth all India education surney – 1989
3. Google search www.google.com
4. Indian Journal of educational research vol – 20-23-24-28
5. Aggarwal J.C 2002 - "Educational research"
6. नालंदा शब्दकोश (1991) आर्य बुक डिपो आगरा.
7. श्रीवास्तव ऊषा एंव त्रिपाठी षिव भूषण – भारतीय आधुनिक शिक्षा एन.सी.आर. टी– अंक (4)
8. Singh R- Impact of Television in the Indian Society 1992
9. Mass media for important things:- American Sociological Review- 38 pp.161-184 – 1973
10. Saini C & Abraham J. 2015:- using social media for educational purpose approaches and challenges.
11. कनौजिया सुनीता 2019 – सोशल साइट का युवाओं पर प्रभाव– एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
12. श्रीवास्तव अनुप्रिया 2020 – युवा महिलाए और सोशल मीडिया उपयोग प्रसार एंव प्रभाव पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
13. नई राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 सम्भावनाऍं एंव सुनोतियॉं –प्रेम परिहार
14. राष्ट्रीय शिक्षानीति – 2020– मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार
15. प्रकाश कुमार– 21वी सदी की मॉग पूरी करेगी नई शिक्षा नीति, आउटलुक हिन्दी – 24 अगस्त 2020

*****